

Lecture No - 24

Dr. Kumari Kavita

Associate Professor

Marwari College, Darbhanga

Topic → Basic Postulates of Psycho-analysis

मनोविश्लेषणवाद का प्रस्थापक Freud को जाना जाता है। यह मनोविश्लेषणवाद वास्तव में ऐसा अकेला सिद्धान्त है जो कि न तो दर्शनशास्त्र से लिया गया और न मनोविज्ञान में इसकी पूर्ण जड़ें ही विद्यमान हैं। इसलिए मनोविश्लेषणवाद को मनोविज्ञान के इतिहास में एक ऐसी क्रान्तिकारी विचार-धारा के रूप में स्वीकार किया जाता है जो अपने जन्म से लेकर वर्तमान समय तक एक बुनौती के रूप में विकसित हुआ है। और इसी रूप में मनोवैज्ञानिकों एवं मनोविश्लेषणवादियों के लिये खान्ही खान्ही अनुसंधान का विषय बना हुआ है। अतः इस विषय में कुछ कहने से पूर्व यह जानना आवश्यक हो जाता है कि मनोविश्लेषणवाद क्या है?

Meaning of Psycho-analysis :- Brown ने मनोविश्लेषणवाद के तीन अर्थ बताए हैं -

- 1) मनोविश्लेषणवाद का एक अर्थ एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में किया जाता है, जिसके द्वारा एक व्यक्तिके आंतरिक जीवन की चेतन और अचेतन गतिशीलता का अध्ययन किया जाता है।
- 2) मनोविश्लेषणवाद को एक प्रकार की ऐसी मनोचिकित्सा कहा जाता है, जिसके माध्यम से असामान्य या मानसिक रोगियों का उपचार किया जाता है। जिसके परिणामस्वरूप मानसिक रोगी पुनः स्वस्थ होकर जीवन की समस्याओं

के साथ समायोजित जीवन व्यतीत करने के योग्य हो जाता है।

3) तीसरे रूप में मनोविश्लेषणवाद का उपरोक्त तीनों रूपों के कोई भी रूप क्यों न हो किन्तु सभी रूपों के फ्रायड ने अपना प्रारम्भिक एवं मौलिक योगदान दिया है। फ्रायड ने मानव की केवल चेतन प्रक्रियाओं के आतिरिक्त अचेतन प्रक्रियाओं का विश्लेषण किया है। फ्रायड सर्वप्रथम कहा करते थे कि मेरा विषय अभिप्रेरणाओं के अन्तर्द्वन्द्वों, मानसिक सुरक्षा प्रक्रियाओं एवं असाधारण व्यवहार के कारणों एवं उनके उपचार के सम्बन्ध में है।

Basic Postulates of Psycho-analysis :-

मनोविज्ञान के क्षेत्र में फ्रायड ने चेतन एवं अचेतन प्रक्रियाओं के जिन पहलुओं का विश्लेषण से अध्ययन किया तथा उनका विश्लेषण करने के परिचात जो निष्कर्ष प्रस्तुत किये वह मनोविश्लेषणवाद की मुख्य मान्यताएँ हैं, जो संक्षेप में हैं :-

- 1) अचेतन (The Unconscious) :- फ्रायड ने मानसिक प्रक्रियाओं को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया है, वे हैं :- चेतन (conscious), पूर्व चेतन (Fore conscious) और अचेतन (Unconscious)। संक्षेप में फ्रायड के सिद्धान्त में अचेतन का बहुत अधिक महत्वपूर्ण स्थान है। फ्रायड ने अचेतन को एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया है जिसका कुछ भाग ज्ञात रहता है और शेष अज्ञात। अचेतन को समझने के लिए फ्रायड ने समुद्र में तैरते बर्फ के पहाड़ का उदाहरण दिया है। जैसे समुद्र में बर्फ के पहाड़ का सिर्फ पानी

भाडा दिखाई देता है जो पानी के ऊपर होता है और शेष भाग पानी के अन्दर होने के कारण दिखाई नहीं देता किन्तु वास्तव में बर्फ के पर्वत का दृष्ट भाग अदृष्ट भाग की अपेक्षा में बहुत ही कम होता है। उसी प्रकार मानव मन का एक बहुत बड़ा भाग अचेतन होता है जो कि अदृष्ट रूप से चेतन को संचालित करता है। इस प्रकार अनेक प्रकार चेतन प्राकृतियों को समझने के लिए फ्रायड ने उनके द्योत अचेतन को समझने पर अत्यधिक जोर दिया है।

अचेतन की विशेषताओं का वर्णन करते हुए इसके अनेक पक्षों पर विचार किया है। फ्रायड का इस विषय में यह कहना है कि हमारे अनेक ऐसे अनुभव, जो दुरिच्छाधी होते हैं तथा इसी कारण से उनका दमन कर दिया जाता है, इस एकत्र सामग्री को समझ आने पर वह चेतन के भाग में भेज देता है। इसके अतिरिक्त ऐसी दूसी उदात्तजन्म वास्तुएं जिनको अभी तक चेतन स्तर पर आने का अवसर नहीं मिला है भी अचेतन में ही हैं।

फ्रायड ने इस विषय में स्पष्ट रूप में स्वीकार किया है कि व्यक्ति का दैनिक व्यवहार अचेतन के द्वारा ही निर्धारित होता है। उसमें भाषा या शब्दों का उपयोग न होकर कल्पना एवं संकेत का ही उपयोग होता है। अचेतन में एक साथ अनेक विरोधी विचारवाक्यें रह सकती हैं। अचेतन में जो इच्छाएं सक्रिय रहती हैं उनकी स्वप्न एवं मानसिक विकृतियों के रूप में अभिव्यक्ति होती है। इस विषय में फ्रायड एवं एडलर की मान्यताओं में केवल इतना अन्तर है कि फ्रायड के अनुसार अचेतन में सक्रिय अनुभव

मान सम्बन्धी होते हैं, जबकि एडलर ने इनमें व्यक्ति की

इच्छा (will to power) से सम्बन्धित कहा है।

2) अचेतन प्रेरक (Unconscious Motives) : — फ्रायड ने अचेतन के अध्ययन को अपने मनोविश्लेषण में अत्यधिक महत्व दिया है वहीं उन्होंने अचेतन के प्रेरकों अर्थात् अचेतन का निर्माण करने वाले तत्वों का अध्ययन करना भी आवश्यक बताया है क्योंकि फ्रायड ने यह देखा कि सम्मोहन की दिशा में जागृत होनेवाली व्यक्ति की दृष्टियों का सम्बन्ध बहुत ही उन व्यक्तिगत एवं व्यक्तियों से होता है जो अल्प इच्छाओं से सम्बन्धित होता है।

3) अवरोधन तथा अवरोध का सिद्धान्त (Theory of repression and Resistance) : — फ्रायड ने अवरोधन के सिद्धान्त को इस मान्यता के आधार पर प्रतिपादित किया कि अचेतन में जो अतृप्त वासनाएं रहती हैं वे निष्क्रिय अवस्था में नहीं रहती अपितु वे सदैव चेतन स्तर पर आने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं। जिसके फलस्वरूप व्यक्ति के चिन्ता का जन्म होता है एवं चेतन अचेतन में अपराधी भावनाओं का उद्भव होता है जो कि अचेतन से प्रेरकों को चेतन स्तर पर आने से रोकता है। इस प्रकार अचेतन का अचेतन की वासनाओं को चेतन स्तर पर आने से रोकना ही अवरोधन तथा अवरोध है।

4) चेतन और अचेतन (conscious and Preconscious) : — मनोविश्लेषणवाद के अनुसार मन के तीन स्तर हैं, जिनके ऊपर सम्पूर्ण मन टिका है, वे हैं— अचेतन, अचेतन तथा चेतन। इनमें अचेतन का वर्णन किया जा चुका है। अचेतन तथा चेतन के विषय में फ्रायड की यह मान्यता है कि मन की

Notes

तार्कालिक सचेतनस्था से सम्बन्धित अवस्था चेतन कहलाती है। इस क्षेत्र में जो भी कार्य होते हैं वे पूर्णतः विचारपूर्ण होते हैं। इस प्रकार मन का यह क्षेत्र ज्ञानात्मक एवं तर्कपूर्ण क्रियाओं से होता है।

अनु-चेतन (Fore conscious) के विषय में फ्रायड के यह विचार हैं कि यह पुनरावृत्ति करने वाले तत्वों का स्थान है। जैसे तो चेतन और अनु-चेतन के मध्य कोई सीमा रेखा नहीं खींची जा सकती किन्तु इसके तत्वों एवं अचेतन के तत्वों में केवल यह अन्तर होता है कि ये अनु-चेतन के तत्त्व अवधान के क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर सकते तथा न ही इनपर अधिक विश्वास ही किया जा सकता है।

— X —
कुमारी कविता
मनोविज्ञान विभाग
मालवाड़ी कॉलेज, दरभंगा